

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

राम

राम

४२१

॥ पदराग धनु प्रभाति ॥

राम

राम

वो दिन को कब ऊगे हो

राम

When will that day rise

राम

वो दिन को कब ऊगे हो ॥ मेरा प्राण आद घर पुगे हो ॥टेर॥

राम

राम

When will that day rise when my soul will reach its eternal home?

राम

राम

धिन धिन वा पुळ क्राई हो ॥ मेरे ध्यान लगे सुन माही हो ॥१॥

राम

राम

The moment my attention is fixed on the Absolute Reality (Bramhshyunya), that moment will be blessed for me, blessed indeed.

राम

राम

राम

त्रिबेणी तट धारा हो ॥ कब न्हावे प्राण हमारा हो ॥२॥

राम

राम

When will the day come when my soul will bath in the confluence of the Ganga, Yamuna, and Saraswati rivers?

राम

राम

राम

जोत अखंडत मांही हो ॥ कब जन देखे जाही हो ॥३॥

राम

राम

When will I see the undivided light of the true form within me?

राम

राम

त्रिगुटी स्हेर मंजारा हो ॥ कब आसण होय हमारा हो ॥४॥

राम

राम

When will my house be in Triguti (Name of a place in spiritual journey)? When will there be a place to stay forever?

राम

राम

राम

कह सुखराम बिचारो हो ॥ अब मोय पार उतारो हो ॥५॥

राम

राम

Satguru Sukhramji Maharaj says, when will I reach original home of true form (adhghar)? And when will I cross the ocean of existence? My soul remained worried about these thoughts' day and night. Therefore, Satguru Maharaj, please take me across the ocean of life quickly and send me back to the home in the true form, this is my request to you.

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम

राम